विचार प्रवाह

जब गाँव डूबेंगे और शहर सूखेंगे

पानी जब अपनी सीमा लांघता है, तो न मानचित्र की रेखाओं को पहचानता है, न दीवारों को, न सरहदों को। और जब धरती की छाती फटती है, तो वह खेत, घर और जीवन सबको निगल लेती है। यही जलवायु संकट है, जिसके सामने आज दुनिया खड़ी है। यह संकट केवल ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्र के बढ़ने या तापमान के उबलने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह इंसानी अस्तित्व के सबसे बड़े सवाल की ओर इशारा करता है–जब गाँव डूबेंगे, जब शहर सूखेंगे, जब खेत बंजर होंगे, तब करोड़ों लोग कहाँ जाएंगे? वे कहाँ अपना घर बनाएंगे, और क्या उन्हें कहीं जगह मिलेगी? यह सवाल न केवल पर्यावरण का है, बल्कि मानवता, नैतिकता और सामाजिक न्याय का है। यह उन करोड़ों लोगों की पुकार है, जो जलवायु परिवर्तन की मार झेल रहे हैं, और जिनके पास न संसाधन हैं, न आवाज़, और न ही कोई ठौर।

विश्व बैंक की 2021 की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 2050 तक 216 मिलियन लोग अपने ही देशों में जलवायु परिवर्तन के कारण पलायन करने को मजबूर हो सकते हैं। यह संख्या आज के कुल शरणार्थियों की संख्या से कई गुना अधिक है। ये लोग युद्ध या हिंसा के कारण नहीं, बल्कि प्रकृति के बदलते मिजाज–बढ़ते समुद्र, भीषण सूखा, बेमौसम बाढ़ और चरम मौसमी घटनाओं के कारण उजड़ेंगे। भारत जैसे देश में यह संकट और भी गहरा है, जहाँ 1.4 अरब की आबादी का बड़ा हिस्सा तटीय इलाकों, बाढ़-प्रवण क्षेत्रों और सूखाग्रस्त मैदानों में रहता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के आँकड़े बताते हैं कि पिछले 50 वर्षों में भारत में चक्रवातों की तीव्रता में 20त्न की वृद्धि हुई है, और सूखे की घटनाएँ भी दोगुनी हो गई हैं। सुंदरबन, जो पहले से ही समुद्र के बढ़ते स्तर से जूझ रहा है, वहाँ हर साल हज़ारों लोग अपनी ज़मीन खो रहे हैं। असम में बाढ़ अब सालाना त्रासदी बन चुकी है, जिसने 2022 में 55 लाख लोगों को प्रभावित किया। बुंदेलखंड और मराठवाड़ा जैसे क्षेत्रों में सूखे ने लाखों किसानों को खेती छोड़ने और शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर कर दिया है।

इस संकट की एक और विडंबना यह है कि जलवायु शरणार्थियों को अभी तक अंतरराष्ट्रीय कानून में स्पष्ट रूप से मान्यता नहीं मिली है। 1951 का जेनेवा शरणार्थी सम्मेलन केवल उन लोगों को शरणार्थी का दर्जा देता है जो युद्ध, हिंसा या उत्पीड़न के कारण अपने देश छोड़ते हैं। लेकिन अगर कोई बाढ़, सूखा या तूफान के कारण बेघर हो जाए, तो वह इस परिभाषा में फिट नहीं बैठता। इसका मतलब है कि जलवायु शरणार्थियों को न तो अपने देश में और न ही विदेश में कोई कानूनी सुरक्षा मिलती है।

भारत में स्थिति और भी जटिल है। यहाँ पहले से ही आंतरिक विस्थापन एक बड़ी समस्या है। 2020 की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल औसतन 1.4 करोड़ लोग प्राकृतिक आपदाओं के कारण विस्थापित होते हैं। यह संख्या किसी भी युद्धग्रस्त देश से कहीं अधिक है। और जब ये लोग शहरों की ओर पलायन करते हैं, तो वे पहले से ही तनावग्रस्त शहरी ढांचे पर बोझ बन जाते हैं। मुंबई, दिल्ली और चेन्नई जैसे महानगरों में झुग्गी-झोपड़ियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, और इनमें से अधिकांश लोग जलवायु परिवर्तन के शिकार हैं। लेकिन सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ इन्हें शरणार्थी के रूप में नहीं देखतीं; ये लोग केवल प्रवासी कहलाते हैं, और उनकी कहानियाँ आधिकारिक दस्तावेज़ों में गुम हो जाती हैं।

इस संकट का सबसे दुखद पहलू यह है कि यह असमानता को और गहरा करता है। गरीब, दलित, आदिवासी, महिलाएँ और बच्चे–ये वे लोग हैं जो सबसे पहले और सबसे ज़्यादा प्रभावित होंगे। एक अमीर व्यक्ति हमेशा बेहतर जगह पर जा सकता है, लेकिन जो पहले से ही हाशिए पर हैं, उनके लिए कोई तैर नहीं है। उदाहरण के लिए, सुंदरबन में रहने वाली आदिवासी महिलाएँ, जो पहले से ही सामाजिक और आर्थिक रूप से कमज़ोर हैं, अब समुद्र के बढ़ते स्तर के कारण अपनी आजीविका और सुरक्षा खो रही हैं। यह केवल पर्यावरण का सवाल नहीं है; यह सामाजिक न्याय का सवाल है। क्या इसका कोई समाधान है? हाँ, लेकिन इसके लिए साहस, दूरदृष्टि और सामूहिक इच्छाशक्ति चाहिए। सबसे पहले, हमें जलवायु शरणार्थियों को एक मानवाधिकार के रूप में देखना होगा। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर स्पष्ट कानूनी ढांचा बनाना होगा, जो इन लोगों को सुरक्षा, पुनर्वास और सम्मानजनक जीवन की गारंटी दे। दूसरा, हमें अपने शहरों को इस तरह से पुनर्गठित करना होगा कि वे विस्थापित आबादी को समायोजित कर सकें। सस्ते आवास, रोज़गार के अवसर, और बुनियादी सुविधाएँ जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा इस दिशा में अनिवार्य हैं। तीसरा, हमें ग्रामीण क्षेत्रों में टिकाऊ विकास पर ध्यान देना होगा–जल संरक्षण, जैविक खेती, और स्थानीय संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण लोगों को उनके गाँवों में टिकाए रख सकता है। जलवायु शरणार्थियों की त्रासदी केवल आँकड़ों की नहीं है; यह हमारी साझा मानवता का सवाल है। जब समुद्र गाँवों को निगल रहा हो, जब धरती खेतों को बंजर बना रही हो, तब हमारी चुप्पी और निष्क्रियता हमें भी इस संकट का हिस्सा बनाती है। यह समय है कि हम न केवल अपने घरों को बचाएँ, बल्कि उस धरती को भी बचाएँ जो हम सबका घर है। अगर हम अभी नहीं जागे, तो वह दिन दूर नहीं जब लाखों लोग हमारे दरवाज़े पर खड़े होंगे, और हमसे पूछेंगे–÷अब हम कहाँ जाएँ?÷ क्या हमारे पास तब कोई जवाब होगा?

प्रो. आरके जैन अरिजीत, बड़वानी (मप्र)

स्कूली छात्राओं के लिए 3 करोड़ छ लाख की लागत से निर्माण हो रहा सीसी रोड चढ़ा भ्रष्टाचार की भेंट

गुणवत्ताहीन गिट्टी का किया जा रहा उपयोग रेती की जगह लगाया जा रहा स्टोन डस्ट

महेश्वर। (सुनिल गाडगे)। 28 अप्रैल 2025 सोमवार को ग्राम पंचायत लाड़वी के निमाड स्पाईस होटल से कन्या शिक्षा परिसर स्कूल तक के सीसी रोड निर्माण कार्य का भूमि पुजन विधि विधान के साथ विधायक राजकुमार मेव के द्वारा किया गया।

3 करोड़ छ लाख की लागत से बन रहा यह रोड इस उद्देश्य से स्वीकृत किया गया था कि इसके बनने से छात्राएं स्कूल स्टाफ और परिजनों को आवागमन में सहूलियत होगी रोड नहीं होने से पूरे स्कूल स्टाफ को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था लेकिन यह सीसी रोड अब भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहा है। सीसी रोड के निर्माण कार्य में घटिया क्वालिटी की गिट्टी का इस्तेमाल किया जा रहा है वही रेती के साथ बड़ी मात्रा में स्टोन क्रेशर से निकलने वाली धूल रूपी डस्ट मिलाई जा रही है। इस घटिया निर्माण कार्य को देखने वाला कोई नहीं है। ठेकेदार धर्मेंद्र जायसवाल खरगोन बेखौफ होकर तेजी से निर्माण कार्य कर रहा है ताकि किसी को भ्रष्टाचार की भनक भी नहीं लगे विभाग के इंजीनियर का भी इस और कोई ध्यान नहीं है। इस घटिया निर्माण के बाद ठेकेदार तो कार्य करके चला जाएगा लेकिन स्कूल प्रशासन को फिर से परेशानियां झेलने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

आपके द्वारा मामला संज्ञान में लाया गया है मैं आज ही अस्सिटेंट इंजीनियर को बोलकर कार्य के गुणवत्ता दिखलाता हूं अगर कार्य गुणवत्ता अनुसार नहीं हो रहा होगा तो ठेकेदार पर उचित कार्रवाई की जाएगी।

इकबाल हुसैन आदिल सहायक आयुक्त खरगोन

कैबिनेट मंत्री श्री चौहान द्वारा अलीराजपुर के छात्रों को की निशुल्क साइकिल वितरण

अलीराजपुर 23 अगस्त 2025 । कैबिनेट मंत्री श्री नागर सिंह चौहान द्वारा पी. एम. श्री शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अलीराजपुर में आयोजित कार्यक्रम में अलीराजपुर में कक्षा 6वी और 9वी में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाओं को 428 नि:शुल्क साइकिलों का वितरण किया गया।

इस कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री श्री चौहान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर इस कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया गया। इस दौरान उन्होंने बच्चों से भविष्य के विषयों पर चर्चा की। चर्चा के दौरान उन्होंने बच्चों से कहा कि केंद्र और राज्य सरकार शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए हर तरह से प्रयासरत है , शिक्षा का और अधिक विस्तार करने के लिए सरकार द्वारा प्रदेश के मेधावी छात्रों को लैपटॉप वितरित किए जा रहे है , ताकि बच्चे तकनीकी ज्ञान के साथ साथ नई शिक्षा नीति से सीधे जुड़ सके। उन्होंने आगे बताया कि गरीब बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करे इसलिए सरकार स्कॉलरशिप के साथ उनकी फीस तक वहन कर रही है। साथ ही बेटी बचाओ , बेटी पढ़ाओ जैसी योजना के तहत बच्चियों के लिए कोचिंग क्लास की व्यवस्था सरकार द्वारा की जा रही जिसमें अध्ययन कर हमारे क्षेत्र की बच्चियां भी अच्छे कॉलेज में एडमिशन प्राप्त कर डॉक्टर , इंजीनियर बन सकती है। कैबिनेट मंत्री श्री चौहान ने साइकिल वितरित कर सभी छात्रों को भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी।

इस दौरान जनप्रतिनिधि श्री गिरिराज मोदी, श्री रिंकेश तंवर सहित बड़ी संख्या में शिक्षकगण और विद्यालय स्टाफ उपस्थित था।

अलीराजपुर मे 28अगस्त को होगा टेलेंट सर्च, निखरेंगे नन्हें तीरंदाजों के हुनर

अलीराजपुर। जिला खेल युवा कल्याण अधिकारी सन्तरा निनामा ने जानकारी दी कि खेल एवं युवा कल्याण विभाग के अंतर्गत संचालित मध्यप्रदेश राज्य आर्चरी अकादमी जबलपुर में प्रवेश हेतु टेलेंट सर्च का आयोजन 28 अगस्त 2025 को खेल परिसर, जिला अलीराजपुर में सुबह 10 बजे से किया जाएगा। इस अवसर पर 12 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बालक एवं बालिका प्रतिभागी भाग ले सकेंगे। राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में पदक विजेता खिलाड़ियों को दो वर्ष की आयु सीमा में छूट भी दी जाएगी। चयन प्रक्रिया के लिए संचालनालय स्तर से गठित प्रशिक्षकों की समिति द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार चयन कर प्रवेश दिया जाएगा। टेलेंट सर्च में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को यात्रा एवं भोजन व्यय स्वयं करना होगा। इसके साथ ही 29 से 31 अगस्त 2025 तक राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर कबड्डी और वॉलीबॉल प्रतियोगिताओं का आयोजन भी खेल परिसर अलीराजपुर में बालक एवं बालिका वर्ग हेतु किया जाएगा।

हम फाउंडेशन भारत शाखा महेश्वर ने मनाई देवी अहिल्याबाई होल्कर की पुण्यतिथि

महेश्वर। त्याग, न्याय, धर्म की प्रतिमूर्ति, उत्कृष्ट विचारों एवं नैतिक आचरण के लिए विख्यात मालवा निमाड़ साम्राज्य, इंदौर की महारानी राजमाता देवी अहिल्याबाई होलकर की जयंती के अवसर पर संस्था हम फाउंडेशन भारत शाखा महेश्वर की कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा मां अहिल्या की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर 7 फीट की फूलों की माला से माल्यार्पण कर उनके चरणों में पुष्प अर्पित किए व उनको नमन किया ।

इस अवसर पर शाखा अध्यक्ष श्रीमती रेखा रन्सोरे, श्रीमती कमलेश सेन, अलका पाठक ,मीना जोशी ,राहुल जोशी, सुनीता उपाध्याय, प्रगति उपाध्याय , मेघा पाठक, डिसेंट बाला दूबे , मीना पुराणिक, मोहिनी बाथम, अनीता वासुरे, खेहा आर्य, संगीता तिवारी आदि उपस्थित थे ।

विहिप की जिला बैठक में

बड़वाह... विश्व हिंदू परिषद की जिला स्तरीय बैठक बड़वाह में सम्पन्न हुई। जहां नव दायित्व की घोषणा की गई। इस अवसर पर अखंड भारत संकल्प दिवस,विश्व हिंदू परिषद का स्थापना दिवस व संगठन विस्तार पर चर्चा की। आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई गई। इस अवसर पर प्रांत संयोजक नितिन पाटीदार,विभाग संगठन मंत्री वासुदेव पांडे,विभाग मंत्री मनोज वर्मा,विभाग संयोजक जितेन्द्र राठौड़,जिला अध्यक्ष रवि गुर्जर,जिला मंत्री नितिन कडक भी शामिल हुए। उन्होंने संगठन के आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। हर हिन्दू को विहिप से जुड़ कर भारत को पुन: विश्व गुरु बनाने के लिए अपना योगदान देना होगा। इस दौरान संगठन विस्तार एवं आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। प्रखंडों के जिले के और नगर के कई दायित्वों की घोषणा की गई। आगामी दिनों में आने वाले त्योहार,अखंड भारत दिवस,विश्व हिन्दू परिषद स्थापना दिवस आदि कार्यक्रमों की विभिन्न प्रखंडों में बस्तियों में कार्यक्रम आयोजित करने कि बात कही।बैठक में विहिप जिला सह मंत्री रितेश कोशल,जिला संयोजक बलराज खटिक,जिला संयोजिका नीलम कोशल,विभाग संयोजिका उमा बेसवाल सहित जिला,प्रखंड और खंड स्तर के कई पदाधिकारी शामिल हुए। प्रखंड स्तर के सभी पदाधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्र में किए गए सेवा कार्यों की जानकारी दी और भावी योजनाओं से भी सभी को अवगत कराया।

माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान, विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश

अलीराजपुर। मध्यप्रदेश शासन के मार्गदर्शन में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति संवर्द्धन की संकल्पना पर केन्द्रित माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान पूरे प्रदेश में प्रारंभ किया गया है। इस अभियान की नोडल संस्था मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद को बनाया गया है।

उच्च शिक्षा विभाग के आयुक्त कार्यालय से जारी निर्देशों के अनुसार, 20 से 26 अगस्त 2025 तक प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जागरूकता कार्यक्रम और प्रशिक्षण-सह-कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं।

इन कार्यशालाओं में स्थानीय मूर्तिकारों और कलाकारों के साथ विद्यार्थी भी मिट्टी से गणेश प्रतिमाएं बनाना सीखेंगे।इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों और परिवाराजनों को प्लास्टर ऑफ पेरिस की बजाय मिट्टी की गणेश प्रतिमाएं स्थापित करने के लिए प्रेरित करना है। साथ ही, घर में ही प्रतिमा का विसर्जन कर जलस्रोतों और पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना भी इस पहल का अहम हिस्सा है।

जन अभियान परिषद द्वारा इस माटी गणेश-सिद्ध गणेश÷अभियान के लिए बनाए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में माटी गणेश प्रतिमा निर्माण कार्यशालाएं आयोजित होंगी।

विद्यार्थियों को सोशल मीडिया के माध्यम से माटी गणेश के लाभ साझा करने और सेल्फी विद माटी गणेश अपलोड करने हेतु प्रेरित किया जाएगा।स्थानीय कारीगरों से प्रतिमाएं खरीदकर 'वोकल फॉर लोकल' और स्वदेशी भावना को प्रोत्साहित किया जाएगा। स्वच्श1 पोर्टल पर डिजीटल शपथ लेने वाले प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र भी उपलब्ध कराया जाएगा।

मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी डॉ. दिवा मिश्रा ने बताया कि अभियान में व्यापक जनसहभागिता सुनिश्चित करने के लिए सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को निर्देश जारी किए गए है।

24 घंटे में प्रात: 08 बजे तक 48.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज

अलीराजपुर । अलीराजपुर जिले में बीते 24 घंटे में प्रात: 08 बजे तक 48.6 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। तहसीलवार अलीराजपुर में 56.0 मि.मि , जोबट में 51.0 मि.मि ,उदयगढ़ में 43.4 मि.मि, च. शे. आ. नगर में 56.4 मि.मि, कट्ठीवाड़ा में 85.0 मि.मि , सोण्डवा में 0.0 मि.मि कुल 291.8 मि.मि वर्षा हुई।

जिले में 01 जून से 23 अगस्त तक 854.0 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई। जिले के अलीराजपुर में 948.0 मि.मि ,जोबट में 604.3 मि.मि , उदयगढ़ में 734.2 मि.मि , च. शे. आ. नगर में 957.4 मि.मि, कट्ठीवाड़ा में 1536.5 मि.मि, सोण्डवा में 344.0 मि.मि कुल 5124.4 मि.मी दर्ज की गई । गत वर्ष इसी अवधि में औसत वर्षा 743.4 मिलीमीटर थी। उक्त जानकारी अधीक्षक भू-अभिलेख द्वारा दी ।

दिवास ग्रुप के द्वारा राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मनाया गया

मंडलेश्वर। नगर मंडलेश्वर में दिवास ग्रुप के द्वारा राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया, इस अवसर पर ÷चाँद पर भारत÷ थीम रखी गई जिसमें ग्रुप की महिलाएं सौरमंडल से जुड़े ड्रेस कोड में सम्मिलित हुईं। कार्यक्रम में चंद्रयान-3 मिशन की सफलता को याद करते हुए इशिका जैन ने कहा कि यह दिन युवाओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित में करियर के लिए प्रोत्साहित करता है, राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस भारत की अंतरिक्ष यात्रा का उत्सव है, जो वैज्ञानिक नवाचार, राष्ट्रीय गौरव और भविष्य की संभावनाओं को प्रेरित करता है। कार्यक्रम स्थल पर सभी ने गर्व से भारतीय तिरंगा लहराया। साथ ही, महिलाओं ने इसरो, सौरमंडल और चंद्रयान से संबंधित रोचक प्रश्नो के खेल खेलकर कार्यक्रम को और भी यादगार बना दिया।

कार्यक्रम के अंत में इशिका जैन द्वारा सभी को पर्यावरण संरक्षण हेतु स्मृति स्वरुप पौधे भेंट किए गए। उक्त कार्यक्रम का उद्देश्य अंतरिक्ष विज्ञान के महत्व और इसके सामाजिक लाभों के बारे में जन जागरुकता बढ़ाना था। कार्यक्रम में वर्षा शर्मा, नेहा सोनी, सुतेजा अवस्थी, ज्योतसना तंवर आदि की उपस्थिति रही।

आदिवासी समाज की संस्कृति एवं परंपरा पर संकट नहीं आने देंगे -गुमानसिंह डामोर

भील महासंघ की प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक हुई संपन्न

20 से अधिक जिलों से सैकड़ों समाजजन हुए शामिल

झाबुआ। धार के फैजी होटल में भील महासंघ की प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन हुआ, जिसमें प्रदेशभर से 20 से अधिक जिलों के सैकड़ों समाजजन शामिल हुए। इस अवसर पर नवीन जिलाध्यक्षों की घोषणा की गई और संगठन को मजबूत बनाने पर जोर दिया गया। जानकारी देते हुए भील महासंघ के मीडिया प्रभारी मनोज अरोरा ने बताया कि बैठक की शुरुआत भारत माता, मां शबरी, एकलव्य, राणा पूंजा और टंट्या भील के चित्रों पर दीप प्रज्जवलन एवं पुष्पांजलि अर्पित कर हुई। पश्चात् राष्ट्रगान और भारत माता के जयकारों के साथ बैठक का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भील महासंघ के प्रांतीय अध्यक्ष एवं पूर्व सांसद गुमानसिंह डामोर ने अपने उद्बोधन में कहा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता हमारी संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपरा और धार्मिक पद्धतियों का संरक्षण करना है। कुछ लोग हमारी परंपराओं और मान्यताओं को समाप्त करने का षड्यंत्र रच रहे हैं, परंतु हम उनके मंसूबों को कभी सफल नहीं होने देंगे। आपने बताया कि 30 सितंबर तक सभी जिलों में कार्यकारिणी का विस्तार एवं 30 अक्टूबर तक तहसील स्तर पर कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा। साथ ही समाज के महापुरुषों की प्रतिमाएं अधिक से अधिक स्थापित करने और उनकी जीवनी तथा स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर लेखन कार्य करने पर भी बल दिया।

महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया–महिला प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित कु. अनू डामोर, जो हाल ही में विदेश से पढ़ाई कर लौटी है, ने समाज में महिला सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता देने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमारी लड़ाई अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी के साथ-साथ उन लोगों से भी है, जो हमें आगे बढ़ने से रोकना चाहते हैं। बैठक में रामकरण भावर, सरदार मेड़ा, वेलसिंह भूरिया, राजू डामोर और भील महासंघ के प्रदेश महासचिव लक्ष्मणसिंह बारिया सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

इस अवसर पर सीताराम मुकाती, दिनेश गरवाल, वरुण डामोर, मजेसिंह मकोड़िया, मेजिया कटारा और मनीष वसुनिया आदि भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन धूमसिंह निनामा ने किया एवं आभार शंकरलाल कटारिया ने माना।